RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • MAY 2018 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

Tecnia Organized Convocation

Medal Winners in group photo with the Dignitaries

Tecnia Institute of Advanced Studies organized its convocation ceremony on 26th May 2018 in which 204 students of 2013-16 and 2014-2016 batch had awarded degree. Neha Garg (BJMC), Rohit Kumar Mishra (MCA), Vivek Jhawar (BBA), and Babli Pandey (MBA) were given Gold medal for their outstanding performance.

On this occasion Prof.SB Arora, (Vice Chancellor, Indira Gandhi National Open University Delhi) graced the moment as Chief Guest. Prof. Sanjeev Mittal (Dean University School of Management Studies, Guru Gobind Singh Indraprastha University, Delhi), Dr. Jaswinder Singh (Principal, Sri Guru Teghbahadur Khalsa College, Delhi University), Prof. Sunil Gupta (Indira Gandhi National Open University, Delhi), Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group), Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies), and Dr. A. K. Srivastava, Chief Executive (Academic and Development, Tecnia Institute of Advanced Studies) were present on this occasion.

Chief guest Prof.SB Arora, (Vice Chancellor, Indira Gandhi National Open University Delhi) motivated students for their future prospects. Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group of Institutions) congratulated students for their future endeavor and told to the student that real journey of their life will starts after getting degree. At the end of the programme Dr. A. K. Srivastava, Chief Executive (Academic and Development, Tecnia Institute of Advanced Studies) gave vote of thanks to the students and faculty members of Tecnia family.

Bal Krishna Mishra

लो आ गया है ये दिवस नाम है जिसका मजदूर दिवस

लो आ गया है ये दिवस
नाम है जिसका मजदूर दिवस...

जो रोटी घर से तो लाता है
पर कभी ना घर में खाता है
बच्चों का पेट ना रहे खाली
हर चीज बाजार से लाता है
ना है पक्ष में ये रात और दिवस
चलो आ ही गया ये अब दिवस
नाम है जिसका मजदूर दिवस....

धर्म पत्नी एक ही साड़ी में
एक सप्ताह गुजार देती है
बच्चों को लेकिन अपने वो
कपड़े हजार देती है
ये संकल्पमयी जीवन में यूँ
खुश हुआ है देखके ये दिवस
नाम है जिसका मजदूर दिवस....

उसका घर ना हो एक मगर
घर सबके वही बनाता है
लौट के जब भी आता है
बूढ़ी माँ को जागता पाता है
माँ के आशीष के कारण ही
बेटे को समर्पित ये दिवस
नाम है जिसका मजदूर दिवस....

सरकार खामोश ही रहती है
इनकी ना कभी वो सुनती है
मजदूर की ना कीमत समझी
बस ताने बाने बुनती है
अरे निकल के अपने महलों से
उपहार में दो एक छत उसे
होगा सार्थक फिर यही दिवस
नाम है जिसका मजदूर दिवस....

- आतिश कुमार

टेक्निया पूर्व छात्र मिलन समारोह 2018

डा. अजय कुमार स्मृति चिन्ह देते हुए

दिल्ली 2 मई 2018 जहां आपने अपनी जिन्दगी के कुछ बेहतरीन सालों को गुजारा हो, जहां आपके भविष्य को एक राह मिली हो । वहां से जाने के बाद जब आप वापस उस जगह आते हैं तो कितना अच्छा लगता है, जब आप अपने गुरुओं से एक बार दुबारा मिल पाते हैं आपकी मुलाकात होती है अपने पुराने साथियों से और यादें ताजा हो उठती हैं कॉलेज में बिताए हुए पलों की कुछ ऐसे ही मस्ती, रोमांच, मनोरंजन और पुरानी सुहानी यादों को एक माला में पिरोकर टेक्निया इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज ने अपने पूर्व छात्रों को एक बार फिर से कॉलेज की जिन्दगी को जीने का मौका दिया। ये मौका था संस्थान के पूर्व छात्र मिलन समारोह 2018 का जहां अनलिमिटेड मस्ती मिली मनोरंजन के तड़के के साथ, गीत–संगीत और नृत्य से मचा धमाल। पूर्व छात्र मिल समारोह 2018 में अतुल्य बैंड ने अपने मधुर गीतों से सम बांधा इस कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. निवेदिता मिश्रा ने बताया कि कार्यक्रम में पूर्व छात्रों के साथ टेक्निया ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस के चेयरमैन डा. राम कैलाश गुप्ता, टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के निदेशक डॉ.अजय कुमार, डॉ ए के श्रीवास्तव, मुख्य कार्यकारी (शैक्षणिक एवं विकास),टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के साथ समस्त संकाय सदस्य और वर्तमान छात्र उपस्थित थे। इस अवसर पर टेक्निया समूह के अध्यक्ष डॉ राम कैलाश गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में छात्रों को अपने कॉलेज के दिनों के संस्मरण सुनाये और छात्रों का उत्साहवर्धन किया।

-यं.ब्यूरो

छात्र नृत्य प्रस्तुत करते हुए

छात्र गायन करते हुए

छात्र नृत्य प्रस्तुत करते हुए

Gadgets of the Month

MB&F The Fifth Element

Max Büsser, the owner and founder of MB&F, is affectionately referred to as Mad Max among his friends owing to his outlandishly genius creations that punch convention in the nose. Take this desktop weather station, limited to just 54 pieces, created in association with clock specialists L'Epée 1839, for example. It features a barometer to show the air pressure, a thermometer to indicate the temperature, a hygrometer to display humidity levels and a clock to tell the time. But look closer and you'll notice a little solid bronze alien figure seated at the bottom of the clock and can be rotated at the push of a button. Mad Max strikes again.

Land Rover Explore Outdoor Phone

We're tired of having to constantly handle our smartphones as though they were a newborn. British carmaker Land Rover, known for its rugged off-roaders, has now debuted the Explore Outdoor Phone, which is built tough. The Explore Outdoor Phone doubles up as a survival tool and has an SOS light, a red-filter mode that helps in night vision, and a special GPS mapping system. The full-HD reinforced touchscreen can be operated with your gloves on. The 64GB Android phone is water resistant and the device is drop tested to heights of nearly two metres. An additional battery pack bumps up the capacity to a whopping 7,620mAh. Bear Grylls would approve

Ultimate Ears UE Live Custom In-ear Monitors

We're tired of having to constantly handle our smartphones as though they were a newborn. British carmaker Land Rover, known for its rugged off-roaders, has now debuted the Explore Outdoor Phone, which is built tough. The Explore Outdoor Phone doubles up as a survival tool and has an SOS light, a red-filter mode that helps in night vision, and a special GPS mapping system. The full-HD reinforced touchscreen can be operated with your gloves on. The 64GB Android phone is water resistant and the device is drop tested to heights of nearly two metres. An additional battery pack bumps up the capacity to a whopping 7,620mAh. Bear Grylls would approve

source: http://gulfbusiness.com /gadgets-of-the-month/

Y.B.

बच्चे क्या पढ़ें, कौन करेगा तय ?

संपादक की कलम से

बच्चों को क्या और कितना पढ़ना चाहिए यह राजनीतिक दल तय करेंगे या शिक्षविदों के ऊपर यह जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए। यह एक ऐसा मसला है जिस पर राजनीतिक धड़ों और अकादमिक समूहों के बीच हमेशा ही तनातनी रही है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना होगा कि मतभिन्नताएं कितनी भी हों। हमारी चिंता के केंद्र में बच्चे का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। वह किसी भी कीमत पर निभाने के प्रयास करने चाहिए। पूर्व की सरकारें व राजनीतिक दलों ने शिक्षा में बदलाव परिवर्तन के नाम जो भी कदम उठाए हैं उसका विश्लेषण राजनीतिक कम अकादमिक स्तर पर होना चाहिए।

हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावेडकर ने कहा है कि बच्चों पर करिकूलम के बोझ को कम करना होगा। हमारे बच्चों पर करिकूलम का बोझ है। बच्चों का विकास अवरूद्ध होता है। 1990 के आसपास या इससे थोड़ा पीछे जाएं तो प्रसिद्ध वैज्ञानिक और शिक्षाविद् प्रो. यशपाल ने एजूकेशन बिदाउट बर्डेन की बात की थी। यानी शिक्षा बिना बोझ के की वकालत न केवल यशपाल ने नीति के स्तर पर की बल्कि पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और पाठ्यचर्याओं में भी रद्दोबदल की मांग की थी। यहां हमें अकादमिक स्तर पर समझना होगा कि जहां प्रो. यशपाल बस्ते के बोझ को कम करने की मांग कर रहे थे वहीं वर्तमान सरकार करिकूलम के बोझ को कम करने की बात कर रही है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के हवाले से कहा तो यह भी जा रहा है कि इस नीति में बच्चों की परीक्षा प्रणाली को भी बदला जाएगा। यानी कक्षा पांचवीं और आठवीं में फेल की प्रक्रिया को बदला जाएगा।

शिक्षा में परिवर्तन न तो कोई नई बात है और न ही अपूर्व घटना। बल्कि शिक्षा का स्वरूप हमेशा ही बदलता रहा है। शिक्षा का परिप्रेक्ष्य समय और कालानुसार बदलता रहा है। लेकिन जो चीज नहीं बदली है वह है शिक्षा का उद्देश्य। किसी भी कालखंड़ पर नजर डालें तो शिक्षा का मकसद एक बेहतर इंसान बनाना है। बच्चों को भविष्य के जीवन की तैयारी के रूप में भी शिक्षा के सरोकारों को रेखांकित किया जाता रहा है।

शिक्षा में करिकूलम, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें तो सहायिका की भूमिका निभाती हैं। ये सहगामी प्रक्रियाएं जिन्हें हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। हम बस इतना कर सकते हैं कि इन सहभागी क्रियाओं को कैसे बेहतर तरीके से इस्तमाल करें ताकि शिक्षा के वृहत्तर मकसद को हासिल किया जा सके।

आज की तारीख में शिक्षा के उद्देश्य में यदि कोई बड़ी तक्सीम हुई है तो वह यही कि हमारा फोकस बदल चुका है। हम पूरी तरह से शिक्षा को नंबरों के पहाड़ पर चढ़ा चुके हैं। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज की तारीख में अंकों के मायने हमारे बच्चों की जिंदगी की दिशाएं तय करने लगी हैं। हालांकि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड जिस प्रकार से नंबरों को बढ़ा□चढ़ाकर परिणाम घोषित कर रही है इस बाबत वह इस गलती को स्वीकार भी कर चुकी है।

वर्तमान में एमएचआरडी का मानना है कि सरकार ने पहली बार रेखांकित किया है कि बच्चों का सिलेबस जटिल है। इसे हल्का करना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो सरकारें जो अब तक रही हैं क्या उनके संज्ञान में ऐसी बड़ी घटना कभी आई ही नहीं या उन सरकारों की प्राथमिकता सूची में शिक्षा के इतने बड़े बोझ को नजरअंदाज ही किया गया। दरअसल जब जब सरकारें सत्ता में आई हैं उन्होंने शिक्षा को अपना एजेंड़ा जरूर बनाया है। बस अंतर इतना रहा कि किसी ने बेहतरी के लिए कदम उठाए तो किसी ने अपने एजेंडा को पूरा करने के लिए शिक्षा का इस्तेमाल किया।

इंसान की फितरत है उसे किसी भी चीज की कीमत का एहसास तब होता है जब वह उसके हाथों से छूट रही हो या छूट चुकी हो। ईश्वर ने यह संसार हम सभी को किराए पर दिया है, जिसे हमें सूद समेत अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंपना है। इस संसार की रचना उस ईश्वर ने हर एक प्राणी को ध्यान में रखकर की थी। हर प्राणी को उसकी रचना के आधार पर शक्तियां प्रदान की गई। इंसान भी उन्हीं प्राणियों में से एक है। जो शक्तियां ईश्वर ने हम इंसानों को पूरी धरती की देख रेख व उसके संरक्षण के लिए दी थी हम इंसानों ने उन्हीं शक्तियों को ईश्वर की रचनाओं को बिगाड़ने में लगा दी गई। इंसानों ने अपनी शक्तियों का गलत इस्तेमाल किया। इस धरती को अपने आधीन कर लिया। अपना घर बनाने के लिए जंगल को नष्ट कर दिया, अपनी प्यास को बुझाने के लिए नदियों को खराब कर दिया, अपनी भूख मिटाने के लिए जानवरों को खत्म कर दिया और आसमान में उड़ने की ख्वाहिश में आकाश के वातावरण को खराब कर दिया। मगर हम इंसान अपने घमंड में इतने अंधे हो गए, भोग विलासो में इतने डूब गए कि खुद की तरफ बढ़ती हुई तबाही को देख ही नहीं पाए। अपने बनाए हुए कुएं में खुद ही गिर गए। सुना है कि अगला विष्व युद्ध पानी के लिए होगा। अब यह हमे सच होता दिखाई दे रहा है। जिस तरह बिना पानी के मछली झटपटाती है उसी तरह हम भी झटपटाने लगे हैं। और ऐसे ही हालात रहे तो एक दिन उस मछली की तरह हम सब भी मर जाएंगे। यह सब एक बुरे सपने सा प्रतीत हो रहा है जो अब सच होता दिखाई दे रहा है।बात सिर्फ केपटाउन की नहीं है बल्कि पूरा विश्व ही गहरे जल संकट की चपेट में है। आग लगने पर कुआं खोदने को मूर्खता कहा जाता है और वही मूर्खता हम सब कर बैठे हैं। पहले कद्र नहीं की और अब... कैसा संसार बना दिया है हम इंसानों ने, क्या देकर जाएंगे अपनी आने वाली पीढ़ियों को। अरे थूकेगीं हमारी आनेवाली पीढ़ियां हम पर। हमने सुना है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं लेकिन अब वह सिर्फ प्राणी हो कर रह गया है। आज पानी की किल्लत हो रही है कल खाने की होगी फिर शुद्ध हवा की और धीरे–धीरे इसी तरह पृथ्वी अपने विनाश से जा मिलेगी। और इसके सबसे बड़े गुनाहगार हम इंसान होंगे। अब बात की जाए पानी की तो जनाब जल है तो कल है.....

Save every drop of water- "We never know the worth of water till the well is dry" **-by Thomas Fuller....**

दूसरों की गलतियों से सबक लेने को तो हम सब कहते हैं पर उसे मानता कोई नहीं। अभी भी वक्त है संभल जाए वरना अगली बारी, अगला नाम हमारा होगा। किसी भी गलत चीज को ना करने के लिए सबसे पहले और सबसे जरूरी हममे उसका डर होना चाहिए महीने अपने घर के एक कमरे में खुद को नजरबंद कर लो आजादी क्या होती है पता चल जाएगा 15 दिन बिना कुछ खाए बिता लो भूख क्या होती है पता चल जाएगा एक हफ्ते बिना पानी के रह लो प्यास क्या होती है पता चल जाएगा और एक मिनट बिना साँस के रह लो हवा क्या होती है पता चल जाएगा। आज विश्व जल दिवस के दिन हम सब जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रतिज्ञा लें जो हमें जल है तो कल है... को साकार करने में मदद करे।

-आतिश कुमार

अंतरर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस.....

हर साल की तरह इस बार भी अंतरर्राष्ट्रीय श्रमिक (विश्व श्रमिक) दिवस को देश और दुनिया में मनाया जाता है। अंतरर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस का तात्पर्य दुनिया के श्रमिकों की हक के लिए लड़ी गयी एक लंबी लड़ाई है। मई दिवस अंतरर्राष्ट्रीय मई दिवस यानी 1 मई 1886 को अमेरिका के शिकागो शहर में अनेक श्रमिक संगठनों ने काम करने की अधिकतम सीमा 8 घंटे करने के लिए हड़ताल की थी। इस हड़ताल के दौरान एक व्यक्ति ने शिकागो के हेय मार्केट में विस्फोट कर दिया। यह देख पुलिस ने श्रमिकों पर गोलियां चलाई, जिसमें सात श्रमिकों की मौत हो गई। अमेरिकी सरकार ने अपनी प्राथमिक जांच में पाया कि पुलिस की गलती थी। घटना के कुछ ही समय बाद ही अमेरिकी सराकर ने श्रमिकों की काम करने की अधिकतम सीमा 8 घंटे निश्चित् कर दी। तभी से अंतरर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस को 1 मई को मनाया जाता है। मई दिवस मनाने की शुरुआत शिकागो में ही शुरू हो गई थी। 1 मई अर्थात शिकागो आंदोलन की बदौलत अधिकतर देशों में श्रमिक के लिए 8 घंटे काम करने का कानून बना। वैसे तो भारत में मजदूर दिवस के मनाने की शुरुआत चेन्नई में 1 मई 1923 से हुई थी।

बलिदान दिवस.....

अंतरर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस लाखों श्रमिकों के बलिदान, परिश्रम, दृढ़ –निश्चय और निष्ठा का दिवस है। एक श्रमिक की देश के निर्माण में बहुमूल्य भूमिका होती है और देश के विकास में उसका अहम् योगदान भी होता है। यह अलग से बताने की जरूरत नहीं कि किसी भी समाज, देश, संस्था और उद्योग में काम करने वाले श्रमिकों की अहम् भूमिका होती है। श्रमिकों के बिना किसी भी औद्योगिक ढांचे के खड़े होने की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इसलिए श्रमिकों का समाज में अपना ही एक लक्ष्य और स्थान होता है।

शोषण जारी.....

यह बात अलग है कि आज भी विकासशील देशों में श्रमिकों के साथ अन्याय और शोषण जारी है। अब हमारे देश की बात लें तो बेशक श्रमिकों के लिए 8 घंटे काम करने का संबंधित कानून है। लेकिन इसका पालन केवल सरकारी कार्यालयों में ही होता हैं। देश में अधिकतर निजी कंपनियों या कारखानों में अब भी श्रमिकों से 10 से 12 घंटे तक काम करवाते हैं। यह एक प्रकार से श्रमिकों का शोषण है। आज जरूरत है कि सरकार को इस दिशा में एक मजबूत कानून बनाये और उसका सख्ती से पालन करें।

श्रमिकों का शोषण.....

हमारे भारत देश में श्रमिकों के वेतन की बात की जाए तो एक बहुत बड़ी समस्या है। आज भी देश में बहुत कम वेतन पर श्रमिकों से काम करवाया जाता है। यह भी श्रमिकों का एक प्रकार से शोषण है। आज भी श्रमिकों से कारखानों या निजी कंपनियों में पूरा काम लिया जाता है। बदले में बहुत कम वेतन दिया जाता है। जिससे श्रमिकों को अपने परिवार चलाना काफी मुश्किल होता है। परिणामस्वरूप श्रमिकों के बच्चों को शिक्षा से वंचित होना पड़ता है और वंचित होना पड़ रहा है।

कम वेतन.....

भारत में अशिक्षा का एक कारण श्रमिकों को कम वेतन दिया जाना भी है। आज भी देश में ऐसे श्रमिक हैं, जो 1500–2000 रुपये की मासिक वेतन पर काम कर रहे हैं। यह मानवता का उपहास है। यह बात अलग है कि राज्य सरकारों ने न्यूनतम वेतन के नियम बनाये हैं, लेकिन इन नियमों का खुले आम उल्लंघन हो रहा है और इस दिशा में सरकारें भी इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही है और न ही कोई कार्रवाई की जा रही है।

कानून बनें.....

विश्लेषकों का मानना है कि आज जरूरत है कि इस महंगाई के समय में सरकारों को निजी कंपनियों, कारखानों और अन्य रोजगार देने वाले माध्यमों के लिए एक कानून बनाना चाहिए। जिसमें श्रमिक की न्यूनतम मजदूरी तय की जानी चाहिए। मजदूरी इतनी होनी चाहिए, जिससे कि श्रमिक का परिवार भूखा न रहे और न ही मजदूरों के बच्चों को शिक्षा से वंचित रहे।

बंधुआ मजदूरी.....

यह अत्यंत विडंबना है कि आज भी हमारे भारत देश में लोगों से बंधुआ मजदूरी कराई जाती है। जब किसी व्यक्ति को बिना मजदूरी या नाम मात्र पारिश्रमिक के मजदूरी करने के लिए बाध्य किया जाता है या ऐसी मजदूरी कराई जाती है तो वह बंधुआ मजदूरी कहलाती है। अगर देश में कहीं भी बंधुआ मजदूरी कराई जाती है तो वह सीधे–सीधे बंधुआ मजदूरी प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम 1976 का उल्लंघन होगा। यह कानून भारत के कमजोर वर्गों के आर्थिक और वास्तविक शोषण को रोकने के लिए बनाया गया था। लेकिन आज भी के कमजोर वर्गों के आर्थिक और वास्तविक शोषण को नहीं रोका जा सका है।

अधिकार.....

भारत के संविधान के तहत प्रत्येक नागरिक को शोषण और अन्याय के खिलाफ अधिकार दिया गया है। लेकिन आज भी देश में कुछ पैसों या नाममात्र के गेहूं, चावल या अन्य खाने के सामान के लिए बंधुआ मजदूरी कराई जाती है, जो कि अमानवीय है। आज जरूरत इस बात की है कि समाज और सरकार को मिलकर बंधुआ मजदूरी जैसी अमानवीयता को रोकने का सामूहिक प्रयास करना चाहिए।

लैंगिक भेदभाव.....

आज भी हमारे देश में मजदूरी में लैंगिक भेदभाव है। कारखानों में आज भी महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेतन नहीं दिया जाता है। बेशक, महिला या पुरुष कारखानों में समान काम करते है। लेकिन बहुत सी जगह आज भी महिलाओं को समान कार्य हेतु समान वेतन नहीं दिया जाता है। कारखानों में महिलाओं से उनकी क्षमता से अधिक कार्य कराया जाता है।

महिला श्रमिक.....

इतना नहीं देश की महिलाओं से भी 10–12 घंटे तक काम कराया जाता है। आज जरूरत है कि सभी उद्योगों को लैंगिक भेदभाव से बचना चाहिए और महिला श्रमिक से संबंधित कानूनों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। इसके साथ ही सभी राज्य सरकारों को महिला श्रमिक से संबंधित कानूनों को कड़ाई से लागू करने के लिए सभी उद्योगों को निर्देशित करना चाहिए। अगर कोई इन कानूनों का उल्लंघन करे तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

बच्चों की हालत.....

भारत देश में छोटे–छोटे गरीब बच्चे स्कूल छोड़कर बालश्रम हेतु मजबूर हैं। बाल मजदूरी बच्चों के मानसिक, शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक एवं सामाजिक हितों को प्रभावित करती है। जो बच्चे बाल मजदूरी करते हैं वे मानसिक रूप से अस्वस्थ रहते हैं और बाल मजदूरी उनके शारीरिक और मानसिक विकास में बाधक होती है।

हैदराबाद शहर में श्रमिक.....

आइए अब तेलंगाना के हैदराबाद शहर की ही बात करते हैं। शहर में हर दिन अनेक चौराहों पर श्रमिक काम के लिए इंतजार करते रहते हैं। इनमें महिलाएं और बच्चे भी रहते हैं। ये श्रमिक सुबह से लेकर शाम तक इन चौराहों पर दिखाई देते हैं। जब कोई एक व्यक्ति इनके पास आता है तो सैकड़ों लोग उसके आस पास इकट्ठा होते हैं। जब वह व्यक्ति बातचीत होने के बाद एक या दो लोगों को काम पर ले जाता है। बाकी श्रमिक अगले व्यक्ति का इंतजार करते हैं। ऐसा हर दिन होता है। यह केवल हैदराबाद का उदाहरण नहीं है। देश के अनेक शहरों और कस्बों में देखने को मिलता है। कहने का तात्पर्य देश के श्रमिकों को बराबर काम नहीं मिल रहा है। जब तक देश के सभी नागरिकों को काम नहीं मिलता है। तब तक देश के विकास की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। कुछ देशों में नागरिकों को काम का अधिकार है। हमारे देश में ऐसा नहीं है। जब तक नागरिकों को काम का अधिकार नहीं मिलता है तब तक कोई भी देश विकसित नहीं हो पायेगा।

आइए नमन करें.....

विश्लेषकों का कहना है कि मजदूर दिवस के अवसर पर संपूर्ण राष्ट्र और समाज को राष्ट्र और समाज की प्रगति, समृद्धि तथा खुशहाली में अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले श्रमिकों के योगदान को नमन करना चाहिए। देश के उत्पादन, वृद्धि और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर जो उच्च मानक हासिल किए गए हैं, वे हमारे श्रमिकों के अथक् प्रयासों का ही नतीजा हैं। इसलिए राष्ट्र की प्रगति में अपने श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानकर सभी देशवासियों को उसकी सराहना करनी चाहिए। इसके साथ ही मजदूर दिवस के अवसर पर देश के विकास और निर्माण में बहुमूल्य भूमिका निभाने वाले लाखों मजदूरों के कठिन परिश्रम, दृढ़ निश्चय और निष्ठा का सम्मान करना चाहिए और मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए संपूर्ण राष्ट्र और समाज को सदैव तत्पर रहना चाहिए।

-यं.ब्यूरो

World No Tobacco Day

The World Health Organization (WHO) designated 31st May of each year as the annual World No Tobacco Day (WNTD). The theme of WNTD 2018 is "Tobacco and heart disease".The focus of the WNTD 2018 will be the cardiovascular health. Tobacco use is a known and important risk factor for cardiovascular diseases (CVD), including coronary heart disease, stroke and peripheral vascular disease, etc. According to WHO, CVD is the leading cause of death worldwide and 12% of all heart disease deaths are contributed by active and passive smoking. However, the knowledge on their association of the public is low. By adopting "Tobacco and heart disease" as the theme of WNTD 2018, WHO encourages parties to organize campaigns to increase the awareness on the link between tobacco and heart diseases, and on the feasible measures that can be adopted by the government and the public to reduce heart health risks imposed by tobacco.

Y.B.

'लफ्ज-ऐ-सिरिया'

मानवीय अधिकार की वकालत करने वालों की मानवों को ही पहचानने की ताकत शायद कमजोर पड़ गई है। कहाँ गए सारे समाजसेवी ,कहाँ गए देश के लिए मर मिटने वाले नौजवान युवा साथी। तुम्हारी संवेदनाएं नही जागी या अभी खून खौलने के लिए ये मंजर ही नाकाफी था। कोई काला दिवस नहीं,कोई पुतले नहीं फूंके गए कोई विरोध नहीं,कोई दबाव बनाने के तरीके नहीं ।क्यों भाई ? सिर्फ इसलिए ना कि वो भारतीय नहीं है और ये सब भारत में नहीं हुआ, इसलिए फर्क नहीं पड़ा ना? अगर सिर्फ यही वजह है तो ऐसे राष्ट्रवाद को मैं धिकारता हूं जो हमें अपने देश के बाहर तमाम जुल्म और अत्याचार के प्रतिहमें संवेदनहीन बनाता हैं। ये जाती,मजहब,राष्ट्रवाद सब के सब हमें बांध कर रख देते हैं एक दायरे में की इससे बाहर ना तो जाना है और ना ही सोचना हैं और ना हमारा कोई कर्तव्य है। हम इस कदर बँट चुके हैं कि हर जुल्म हमें जुल्म नहीं लगता हर गलत काम हमें गलत नहीं लगता जब तक वो हमारे साथ ना हो हमारी जाति के साथ ना हो हमारे मजहब केसाथ ना हो या फिर हमारे राष्ट्र के साथ ना हो। बस यही तक तो सीमित हैं ना हम। यही तो सिखाया है ना जात–पात के नेताओं ने धर्म के ठेकेदारों ने और देश को अपने बाप की जागीर समझने वालों ने। कभी गलत और सहीका अंतर ना तो दिखाया ना समझाया ,बस अंतर दिखाया तो यही की कौन अपना है कौन पराया। किसके भले के लिए सोचना हैं किसके नहीं। किसके दुख दर्द में शामिल होना हैं किसके नहीं। यही तो हो रहा है यही होता आया हैं

-आतिश कुमार

रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती'

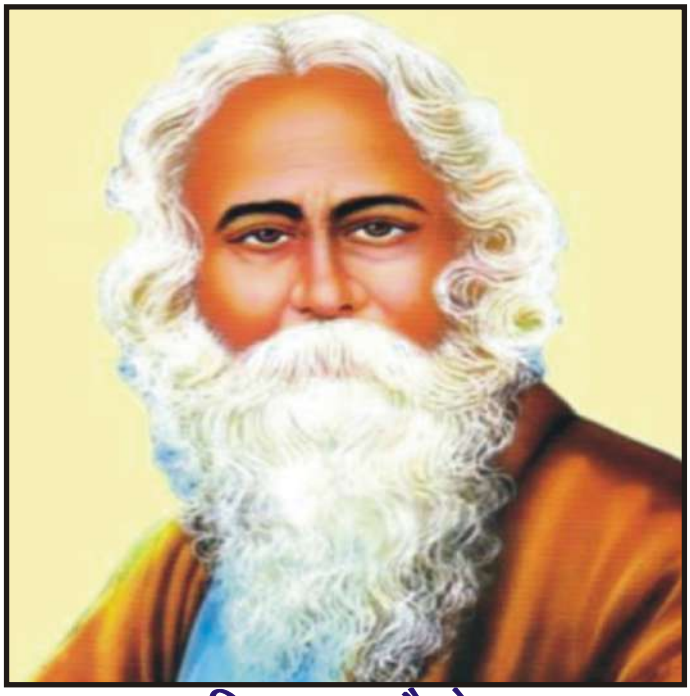

हर साल 7 मई को 'रबिन्द्रनाथ टैगोर जयंती' के रूप में मनाया जाता है। रबीन्द्रनाथ टैगोर एक महा पुरुष, एक महान कवि और एक महान व्यक्ति थे। रबीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कलकत्ता में 7 मई 1861 एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ. इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता जी का नाम शारदा देवी। वो अपने माता–पिता की 14वीं संतान थे। रबीन्द्रनाथ टैगोर बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। रबिन्द्रनाथ टैगोर ने बचपन से ही कविता लिखना शुरु कर दिया था. उनके लिखने की शैली से उस समय के कवि, वैज्ञानिक, और इतिहासकार बहुत ही प्रभावित थे यही कारण था की उनकी बचपन में लिखी हुई रचनायें उस समय की प्रसिद्द और जानी मानी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे।

ये अपने देश और यहाँ की गुरु शिष्य की परंपरा को वो इंग्लैंड में बहुत ज्यादा मिस करने लगे. यही कारण था की इंग्लैंड में उनका मन लगा नही और वहाँ की शिक्षा की पारंपरिक व्यवस्था से वो संतुष्ट नहीं हुए और भारत लौट आए। बाद में भारत लौट कर उन्होने बंगाल के वीरभूमि के बोलपूर में शांतिनिकेतन नाम से अपना स्कूल खोला। स्कूल ने भी अपनी कामयाबी की मिसाल पेश की और बाद में यही स्कूल कॉलेज बना और उसके बाद विश्वविद्यालय, जिसे विश्व–भारती के नाम से जाना जाने लगा। रविन्द्रनाथ टैगोर की रूचि बहुत से विषयों मे थी यही कारण हैं की उनकी रचनाओं में हर तरह का लेख मिलता है। और यही कारण है की वो एक महान कवि, साहित्यकार, लेखक, चित्रकार, और एक बहुत अच्छे समाजसेवी बने। अपने जीवन काल में रविद्रनाथ टैगोर ने हजारों कविताएँ, लघु कहानियाँ, गानें, निबंध, नाटक आदि लिखे। सन 1913 में उनकी रचना "गीतांजलि"के लिये इनको नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वो प्रथम भारतीय हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार दिया गया। रविन्द्रनाथ टैगोर ना केवल भारत के **रविन्द्रनाथ टैगोर** राष्ट्रगान के जनक हैं बल्कि उन्होने ही बांग्लादेश का राष्ट्रगान भी लिखा। भारत और बांग्लादेश हमेशा उनका कर्जदार रहेंगे। भारत के लिए "जन–गण–मन है" और बांग्लादेश के लिये "आमार सोनार बांग्ला" लिखा। इसके अलावा उन्होने कई सामाजिक और काव्यात्मक कवितायें और उपन्यास लिखे जिनमें प्रमुख हैं– पूरवी, मनासी, गलपगुच्छा, सोनार तारी, कल्पना, चित्रा, नैवेद्या और गोरा, चित्रांगदा, मालिनी, बिनोदिनी, नौका डुबाई, राजा और रानी।

रविन्द्रनाथ टैगोर को उनकी अनेकों प्रसिद्ध और आलौकिक रचनाओं के लिए ब्रिटिश क्राउन द्वारा उन्हें नाइटहुड से सम्मानित किया गया जिसे बाद में सन 1919 में रविन्द्रनाथ टैगोर ने जलियावाला बाग में नरसंहार के खिलाफ विरोध स्वरुप उन्होने वापस कर दिया। रविन्द्रनाथ टैगोर की मृत्यु 7 अगस्त 1941 को कोलकाता में हुई। एक महान कवि, देशभक्त, दर्शनशास्त्री, मानवतावादी और चित्रकार के रूप में रविन्द्रनाथ टैगोर हर भारतीय के दिल में हमेशा जीवित रहेंगे। रविन्द्रनाथ टैगोर को बहुत सारे नामों से जाना जाता है। उनको रविन्द्रनाथ ठाकुर, रोबिन्द्रोनाथ ठाकुर और गुरुदेव नाम से भी पुकारा जाता है। वो भारतीय साहित्य के एकमात्र नोबल पुरस्कार विजेता है। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति है और विश्व के एकमात्र कवि हैं जिन्होने 2 देशों के राष्ट्रगान लिखे हैं।

-कृति बावेजा

'माँ'

कमरों की बिखरी चीजों में गुम हो गयी है वो प्यारी डाँट–फटकार आप कहोगे भला डाँट भी किसी को प्यारी होती है! हम कहेंगे बेशक जब डाँटने वाली माँ हमारी होती है।

अब जब बाहर रहने लगे हैं घर से दूर तो कोई ये नहीं बोलता "कहीं भी पानी पी के ग्लास रख देते हो किचेन में रखोगे तो हाथ टूट जाएगा"

कोई ये नहीं बोलता "किताबे फैलाने से अंक नहीं आते इन्हें पढ़ना भी होता है" कोई ये नहीं बोलता "बेटा कभी इन्सानों की तरह भी सो लिया करो क्या हालत बना दी है बिस्तर की"।

उस डांट फटकार की इकदम अलग ही बात थी यार वो चीजों को सुव्यवस्थित और कमरे को सुंदर रखने में थी मददगार

माँ के विडियो काल आते ही कमरे से बाहर चले जाते हैं और झूठ कहते "अन्दर नेटवर्क नहीं है बाकी यकीन मानो माँ अब हम नहीं रहते पहले जैसे"

वो अलग बात है असलियत हम ही जानते कि हम आज भी कुत्ते की दुम सा वैसे ही हैं इकदम पहले जैसे ।।

"आगे बढ़ने की चाह में,ना जाने कहा आ गया जब भी खोया भीड़ में तो माँ का चेहरा याद आ गया"

आतिश कुमार

अरुणाचल प्रदेश का गेटवे - पर्यटन स्थल पासीघाट

अरुणाचल प्रदेश का एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है 'पासीघाट'। ये क्षेत्र इतना सुंदर है जिसके कारण इसे अरुणाचल का गेटवे कहा जाता है। चारों तरह पहाड़ियों से घिरा पासीघाट किसी जन्नत से कम नहीं लगता। कुदरत का करिश्मा यदि आंखों से देखना हो तो आप पासीघाट आएं। यहां के खूबसूरत नजारे आप को यहीं का बना लेंगे।

वाइल्ड लाइफ सेंचुरी

प्रातिक सुंदरता से भरपूर पासीघाट अपने वन्यजीवन के लिए काफी प्रसिद्ध है। वाइल्ड लाइफ सेंचुरी सैलानियों को रोमांचित करने का काम करती है। यहां आप जंगली जानवरों और वनस्पतियों की कई प्रजातियों को देख सकते हैं। सर्दियों के दौरान यह स्थान प्रवासी पक्षियों का एक मुख्य गंतव्य बन जाता है। साइबेरिया और मंगोलिया से आए पक्षी इस दौरान यहां अपना अस्थाई घर बनाते हैं। जंगली जीवों में आप यहां तेंदुआ, जंगली बिल्ली, भौंकने

वाली हिरण, सांभर, सियार, जंगली सूअर, अजगर आदि जीवों को देख सकते हैं।

केकर मोनिंग एक आकर्षक पर्वतीय चट्टान

पूर्वी सियांग के पास केकर मोनिंग एक बेहद खूबसूरत पर्वतीय चट्टान है, जिसकी सुंदरता देखने के लिए यहां देश–विदेश से लोग आते हैं। केकर मोनिंग अरुणाचल प्रदेश के लिए काफी ऐतिहासिक महत्व रखता है। यहां की बड़ी चट्टान पर एक ऐतिहासिक स्मारक भी मौजूद है, जो अंग्रेजों के सहायक राजनीतिक अधिकारी नोएल विलियमसन को समर्पित है।

पांगिन खूबसूरत नगर

पांगिन पासीघाट के नजदीक ही एक छोटा मगर बेहद खूबसूरत नगर है जो अपनी अद्भुत सौंदर्यता के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह स्थान सैलानियों के बीच मध्य काफी लोकप्रिय है। पांगिन में आप अरुणाचल प्रदेश की दो प्रमुख नदियों सियोम और नदी सियांग का जंक्शन प्वाइंट देख सकते हैं, जो काफी मनोरम श्य पैदा करने का काम करता है।

राफ्टिंग

यहां बहने वाली सियांग और ब्रह्मपुत्र नदियों में आप राफ्टिंग भी कर सकते हैं, ये एडवेंचर शौकीनों को अपनी ओर आकर्षित करने का काम करती है। इन नदियों में आप बेस्ट राफ्टिंग का आनंद ले सकते हैं।

-यं.ब्यूरो

THIS MONTH

May 21, 1991 - Former Indian Prime Minister Rajiv Gandhi was assassinated in the midst of a re-election campaign, killed by a bomb hidden in a bouquet of flowers. He had served as prime minister from 1984 to 1989, succeeding his mother, Indira Gandhi, who was assassinated in 1984.

*****

May 1, 2004 - Eight former Communist nations and two Mediterranean countries joined the European Union (EU) marking its largest-ever expansion. The new members included Poland, Hungary, the Czech Republic, Slovakia, Slovenia, Lithuania, Latvia, Estonia, along with the island of Malta and the Greek portion of the island of Cyprus. They joined 15 countries already in the EU, representing in all 450 million persons.

*****

May 2, 2011 - U.S. Special Operations Forces killed Osama bin Laden during a raid on his secret compound in Abbottabad, Pakistan. The raid marked the culmination of a decade-long manhunt for the elusive leader of the al-Qaeda terrorist organization based in the Middle East. Bin Laden had ordered the coordinated aerial attacks of September 11th, , in which four American passenger jets were hijacked then crashed, killing nearly 3,000 persons. Two jets had struck and subsequently collapsed the 110-story Twin Towers of the World Trade Center in York, while another struck the Pentagon building in Washington, D.C. A fourth jet also headed toward Washington had crashed into a field in Pennsylvania as passengers attempted to overpower the hijackers on board.

*****

Compilation: Honey Shah

सोच रहा हूँ

सोच रहा हूँ कि अगर बस में हुआ मेरेतो'एक दिन'घुमा दूं घड़ी की सुइयों को और चला जाऊ वक्त में वापिस और सभी चुपड़ी रोटियां खाऊं जो मैंने मम्मी से आंख बचाकर फेक दी थी....

एक दिन जाऊं जनवरी की सुबह में वापिस जहाँ मैं अपनी बैटिंग करके भाग गया था और कराऊं बचे हुए ओवर उस दोस्त को जो बंक करके खेलने आया था...

एक दिन' पापा के पर्स में से चोरी किए हुए वो दस रुपए वापिस रखकर देखूं कि उसमे कर्ज की कितनी नोटे थी,जब मेरे कहने पर उन्होंने दो–दो ट्यूशन की फीस दी थी...

और उस पेड़ पर फिर से चिड़िया का घोंसला रख दूं जिसे मैंने खुद को अर्जुन समझते हुए पत्थर मार दिया था..

.एक दिन' दादी के लहसुन–मिर्चे वाले हाथो को सूंघकर डायरी में नोट कर लूं और दुनिया को दिखाऊँ कि स्वाद का भी एक केमिकल स्ट्रक्चर हो सकता है....

और 'एक दिन' बहन की छोटी सी हथेलियों और चुलबुली–सी बातों की गहराई नापकर एक योरम बनाकर सिद्ध करूँ कि भय और प्रेम एक दूसरे के पूरक है....!!

-आतिश कुमार

BASICS OF MEDIA

Medium Requirements: All content elements, production elements, and people needed to generate the defined process message.

*****

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

*****

Teleprompter: A prompting device that projects the moving (usually computer-generated) copy over the lens so that the talent can read it without losing eye contact with the viewer. Also called auto cue.

*****

Production Schedule: The calendar that shows the reproduction, production, and postproduction dates and who is doing what, when, and where.

*****

Program Proposal: Written document that outlines the process message and the major aspects of a television presentation.

*****

Treatment: Brief narrative description of a television program.

*****

Compilation: Rahul Mittal

अन्नदाता के सहनशीलता की परीक्षा

अन्नदाता के सहनशीलता की परीक्षा की सीमा खत्म हो चुकी है। उसे पता चल गया है यूँ बैठे रहने से कुछ भी नहीं हो सकता है। अगर मरना है तो गोली खाने को तैयार हैं अब सल्फास खाने से काम नहीं चलेगा। मुश्किल से चार खबरें छपती हैं अखबार में की 4 जगहों पे इन इन किसानों ने आत्महत्या कर ली । लेकिन ऐसे कितने किसान हैं जिनकी मौत का मीडिया को तो क्या उनके खुद के परिवार तक को पता नहीं चलता। हमारे सामने वही आंकड़े रखे जाते हैं जिनसे हमारे अंदर एक करुणा का भाव उत्पन्न हो जाये । कोई चींख बाहर न निकले । लेकिन अगर इन्ही मरे हुए किसानों के सालाना आंकड़े पर ध्यान दें तो हर साल भारत में 12 हजार से ज्यादा किसान आत्महत्या कर रहे हैं । जिस तरह किसी देश के विकास में प्रौद्योगिकी तकनीक व्यापार जैसी चीजें जरूरी हैं उसी प्रकार जरूरी है कृषि।

भारत एक कृषि प्रधान देश है देश की 70 प्रतिशत आबादी का आमदनी का स्रोत कृषि है अब शायद ये आकड़ा घट गया हो । जब हर साल 10 हजार से ज्यादा किसान मर रहे हैं तो स्रोत तो घट ही रहा है । एक किसान ने अगर कर्ज लिया है तो उसकी आने वाली सात पुस्ते बीत जाती हैं लेकिन वो कर्ज वहीं का वहीं रहता है । अगर देश में किसान ही नहीं रहेगा तो अन्न कहाँ से आएगा ? सोच लेते हैं कि बाहर से मंगाया जायेगा लेकिन कितना ? अभी देश की आबादी 130 करोड़ के ऊपर ही जा रही है इतने लोगों के लिए अनाज किसी भी देश से मंगाना असम्भव ही है। सबसे बड़ी समस्या अब ये भी है कि अब किसान का बेटा भी किसान बनने से कतरा रहा है क्योंकि उसने अपने पिता के श्रम को देखा है वो हर प्रारूप में कोशिश करेगा की वो अपने परिवार को ऐसे संकट से बाहर निकाले। सरकार पर कुछ लिखने को बचता नहीं है। सबसे बड़ी दिक्कत होती है किसी चीज का आदी हो जाना हम इस व्यवस्था के आदी हो गये हैं। अब अगर अखबार में चार लाशें तैरती हुई ना मिले तो हमें आश्चर्य होगा । 3 बलात्कार नहीं दिखें तो आश्चर्य होगा और अगर कोई इंसान इन सब के चीजों के विपरीत बुनियादी मुद्दों पर सवाल उठाये चाहे वो एसएससी स्कैम हो , चाहे किसानों से जुड़ी समस्या हो , चाहे नारी सुरक्षा को लेकर हो तो वो देश का सबसे बड़ा दुश्मन हो गया है । वो देश द्रोही है सही है भाई अगर वो लोग भूखे पेट हैं और सल्फास खा के खुद का और परिवार का पेट भर रहे हैं । अपने हक के लिए आवाज उठाने पर अगर लोगों को देशद्रोही कहा जाने लगा इस हिसाब से तो देश में देशप्रेमी बचेगा ही नहीं । 'आवाज तो सुभाष चंद्र बोस की भी यहाँ नकार दी गयी थी.. लेकिन फौज बनी भी ये देश गाँधी को भी पूजता है बोस को भी.. अब वक्त है बोस को लाने का.. सबसे जरूरी चीजें जो होनी चाहिए

1– हर उस संगठन में जहाँ धर्म के नाम पर लोगों को बहकाने का काम होता है उन्हें बंद करना चाहिए ।

2– वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए

3– आतंकवाद से पहले भूखमरी से लड़ने के बारे में सोचना चाहिए

4– हर चीज के डिजिटलाईज़ेशन की तरह शिक्षा और कृषि में भी इनके ऊपर काम होना चाहिये। और बहुत कुछ कर सकते हैं पर लोग सवाल नहीं उठाते हैं हम ये सोच के पीछे हट जाते हैं मुझसे क्या मतलब..... की तरह शिक्षा और कृषि में भी इनके ऊपर काम होना चाहिये। और बहुत कुछ कर सकते हैं पर लोग सवाल नहीं उठाते हैं हम ये सोच के पीछे हट जाते हैं मुझसे क्या मतलब.....

आतिश कुमार

Vol. 14 **No.** 5
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation: Sanjay Srivastava

WINNERS v/s LOOSERS Part-82

Winners choose what they say;
Losers say what they choose.

*****

Winners truly believe;
Losers only hope.

*****

Winners are always part of the solution;
Losers are always part of the problem.

*****

Winners have a mission;
Losers have excuses.

*****

Winners maximize their strengths;
Losers dwell on their weaknesses.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**